दिनांक :- 18-07-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम :- डॉ॰ फारूक आज़म (अतिथि शिक्षक)

स्नातक :- प्रथम खंड (कला)

विषय :- प्रतिष्ठा इतिहास

इकाई :- दो

पत्र :- प्रथम

अध्याय :- संगम काल स्त्रोत

सैन्य प्रशासन :- प्रत्येक शासक पेशेवर सिपाहियों की एक सेना रखता था जिसे पडैय कहा जाता था। इसका अर्थ विनाशक होता है। फौज के कप्तानो को ईनाडी की उपाधि एक विशेष समारोह में दी जाती थी जिसमें राजा चुने हुए व्यक्ति को अंगूठी और उच्च सैनिक पद के प्रतीकस्वरूप अन्य चिन्ह अर्जित करना था।

सेना के परम्परागत चार हिस्से थे। रथ (बैलों द्वारा खींचे जाने वाले) हाथी, घुड़सवारी पैदल सेना की अगली टुकड़ी को तुरी तथा पिछली टुकड़ी को पुलै कहा जाता था। मारथा सैनिकों को दिया गया विशिष्ट जागीर था। हर राजा तथा सेनापति का अपने चिन्ह के रूप में एक युद्ध ढोल होता था। न केवल उसकी सावधानी से रक्षा होती थी बल्कि उच्च स्वर में पठित मंत्रों से उसकी पूजा भी होती थी।

युद्ध भूमि से मृत्यु स्वर्ग द्वार के रूप में मान्य थी। ऐसी मृत्यु न केवल सैनिकों के लिये बल्कि उनकी माँ के लिये भी सम्मानीय थी। युद्ध में मृत सैनिकों की पाषाण मूर्तियाँ बनाती थी। तथा उसकी स्मृति में शिलापट्ट लगाये जाते थे। इसे विरकल या नडुकल कहा जाता था। राजा स्वयं युद्ध का नेतृत्व करता था। पराजित राज्य के शासक तथा नागरिकों के साथ क्रूर व्यवहार किया जाता था।

Scanned with CamScanner

तथा बहुधा शत्रु के खेतों तथा फसलों को नष्ट कर दिया जाता था।

आर्थिक व्यवस्था :- राजस्व प्रशासन

राजकीय आय का मुख्य स्त्रोत कृषि था। तमिल क्षेत्र की भूमि उर्वरता के लिये प्रसिद्ध थी। आवुर किलार के अनुसार एक हाथी बैठने की जगह में 7 व्यक्तियों को भोजन मिल सकता था।

कृषि कर करई तथा कदमई कहलाता था।

भूमि की पैमाइश के लिये मा तथा बेलि पैमानों का प्रयोग होता था।

सामंतों के द्वारा दिया गया अंश या युद्ध से प्राप्त लूट के धन को इरई कहा जाता था।

अतिरिक्त कर या जबरन वसूल किया जाने वाला कर इराबु था।

राजा को दिया गया उपहार पदु किये जाने वाला पदु कहलाता है।

उपहार (लूट के धन को) के द्वारा आर्थिक पुनर्वितरण होता था।

सम्पन्न एवं शक्तिशाली वर्ग में तीन प्रकार के लोग थे:

वेतर, वेलिर, वेल्लार।

Scanned with CamScanner

व्यापार:-लेन देन का सामान्य तरीका वस्तु विनियम था। तमिल प्रदेश में वस्तु विनिमय प्रणाली में ऋण व्यवस्था नहीं थी। किसी वस्तु की निश्चित राशि का ऋण लिया जा सकता था बाद में उसी प्रकार तथा उसी मात्रा में वही वस्तु लौटा दी जाती थी यह प्रथा कुरीलिरपरई कहलाती थी
मात्र धान तथा नमक की ही निश्चित विनिमय दर थी जिसमें धान की समान मात्रा के बराबर नमक दिया जाता था।

दूरस्थ:- उत्तर भारत तथा सुदूर दक्षिण के बीच व्यापार की चर्चा चौथी ईसा पूर्व से ही ज्ञात होती है। प्राचीन बौद्ध ग्रंथों से जिस मार्ग का संकेत मिलता है, वह गंगा घाटी से गोदावरी घाटी तक जाती थी तथा यह दक्षिणापथ के नाम से जानी जाती थी।

कौटिल्य ने दक्षिण मार्ग के अनेक लाभ गिनाए हैं जिन में बहुमूल्य रत्नों की प्राप्ति प्रमुख है।

Scanned with CamScanner

उत्तर तथा दक्षिण के बीच व्यापार की अधिकांश मदें विलासिता संबंधी वस्तुओं की थी। जैसे: मोती, रत्न और स्वर्ण। उत्तम किस्म के वस्त्रों का व्यापार भी होता था।

उत्तरी भारत की उत्तरी काली मृद्भांड सुदूर दक्षिण में भी लोकप्रिय थी। दक्षिण भारत में भी आहत सिक्के मिले हैं।

विदेशी व्यापार:- इस काल में विदेश व्यापार सुगठित था। बड़े बंदरगाह वाले नगर माल के व्यापारिक केन्द्र थे। पुहर बंदरगाह इतना सुविधा जनक था कि बड़े-बड़े विदेशी बिना पाल उतारे ही तट पर आजाते थे।

संगम साहित्य में पांड्य राज्य में शालियुर तथा चेर राज्य में बंदर नामक तटों की गणना महत्वपूर्ण बंदरगाहों में की गई है। मुजरिश में रोमन सम्राट आगॅस्टस का मंदिर रोमनों द्वारा बनवाया गया। चेरों की प्राचीन राजधानी करूर (वांजी पुर) में अनेक रोमन सामग्री प्राप्त होती है।

Scanned with CamScanner

सम्पन्न यवनों के निवास को मरुवर कहा जाता था।
विरुक्कामपलिया नामक स्थान चेर, चोल तथा पांड्य
राज्य के संगम स्थल के रूप मे है।
अरिकमेडु (पांडिचेरी) भारत तथा रोमन व्यापार का
एक अन्य महत्त्वपूर्ण व्यापारिक केन्द्र था। इसके
अलावा कावसमुद्र (चेन्नई) भी एक अन्य महत्त्वपूर्ण
केन्द्र था। जो पालार नदी के रूप में है। और मुहाने पर
स्थित था।
इंडो-रोमन व्यापार के संबंध मे पेरिप्लस से भी जान
कारी मिलती है।
इस ग्रंथ में नौरा (कन्नौर), तोण्डी (आधुनिक कोलमी)
मुजिरिस, नेल्किंडा को पश्चिमी तट का प्रमुख बंदरगाह
बताया गया।
पेरिप्लस अरगरु का उरैयपुर नामक स्थान की भी चर्चा
करता है। यहां से अरगरिक नामक मलमल का निर्यात
होता था। जहां उल्लेख है कि मलमल बहुत बड़े पैमाने
पर मसालिया में होता था।

Scanned with CamScanner

संगम काल में निर्यात की मुख्य मदें थी- मसाला, रत्नमणि, इमारती लकड़ी एवं हाथी दाँत।
उत्तर में बसे प्रदेश द्वोसरनु (उड़ीसा) का विशेष उत्पादन हाथी दांत था।
तमिल प्रदेश से आगस्तस तथा टिबेरियस के मुहर वाले सिक्के और नीरो के सोनो और चाँदी के सिक्के प्राप्त हुए हैं
रोम के अतिरिक्त मिस्र, अरब चीन और मालदीव के साथ व्यापार होता था। इस समय व्यापारिक (स्थल मार्ग) कारवाँ का नेतृत्व करने वाले सार्थवाह को बासातुरवा एवं समुद्री सार्थवाह को मानानिकम कहा जाता था।
सिक्के:- प्राचीन तमिल साहित्य में कुछ सिक्को की भी जानकारी मिलती है उदाहरण के लिए काशु, कनम पोन तथा वेनपेन
सीमा शुल्क को उलगू (उल्कू) या शुंगम कहा जाता था।
यह वाणिज्य व्यापार की उत्तमता का सूचक है दस्तकारो को अपने उत्पादो पर शुल्क देना होता था।

Scanned with CamScanner